खेती के साथ दूध उत्पादों की बिक्री से आय में हुई बढ़ोतरी

पशुपालक का नाम	:	श्री राकेश कुल्हरी
पिता का नाम	:	श्री महावीर कुल्हरी
उम्र	:	44 वर्ष
पता	:	चूड़ी चतुरपुरा, मंडावा (झुंझुनूं)
शिक्षा	:	8वीं पास
मोबाइल नं.	:	9414234121

प्रगतिशील किसान राकेश कुल्हरी निवासी चूड़ी चतुरपुरा ने खेती के साथ अपनी आय को बढ़ाने की सोची। जब व्यक्ति कुछ नया करने का जज्बा बना लेता है तो सफलता भी निश्चित मिलती है। पारंपरिक खेती से ताल्लुक रखने वाले इस किसान के पास कुल 35 बीघा सिंचित व असिंचित जमीन है। विगत दो वर्षों से ये पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनूं के संपर्क में आए और यहां पर समय–समय पर वैज्ञानिक बैठकों एवं प्रशिक्षण में भाग लिया। वर्तमान में इनके पास 35 गाये हैं जिससे प्रतिदिन 250 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है। जिसे बेचकर वे लगभग 9–10 लाख रुपये सालाना प्राप्त कर लेते है। आधुनिक तकनीकी से जानकारियां अपनाकर दूध से खोवा, पनीर, रसगुल्ला जैसी मिठाइयां तैयार की जाती है। आज के टाइम में जो मिलावटी दूध बाजारों में बिक रहा हैं उससे इन्होंने अपने क्षेत्रवासियों को बचाने का काम किया है, ऐसा करके इन्होंने बहुत बड़ी मिसाल कायम की है और अपनी आय को भी दोगुना करने का काम किया। वे अपनी आय को दोगुना करने का श्रेय पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू के विषय विशेषज्ञों की टीम को देते है तथा अन्य पशुपालकों को भी पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनूं से जुड़कर प्रशिक्षण में भाग लेकर उच्च तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर अपने व्यवसाय को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं।

सिरोही नस्ल की बकरियां बनी जीने का सहारा

पशुपालक का नाम	:	श्री हरिप्रसाद
पिता का नाम	:	श्री प्रेमाराम राहड़
उम्र	:	43 वर्ष
पता	:	डूमरा, नवलगढ़ (झुंझुनूं)
शिक्षा	:	पांचवी पास
मोबाइल	:	84419 80026

हरिप्रसाद निवासी दुदाना का बास डूमरा, तहसील नवलगढ़, जिला झुंझुनू, राजस्थान से एक लघु सीमांत किसान है जिन्होंने अपने पास जमीन की अपर्याप्तता के होते बकरी पालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। हरिप्रसाद शुरू से ही खेती तथा पशुपालन पर आश्रित थे लेकिन इन्होंने चार–पांच वर्ष से बकरी पालन पर ही अपना ध्यान केंद्रित किया व बकरी पालन को एक नए सिरे से शुरू किया। जब हरिप्रसाद ने 4 वर्ष पूर्व बकरी पालन शुरू किया तब इसकी जानकारी के अभाव में इनका बकरी पालन सही तरीके से आगे नहीं बढ़ पाया। इनका संपर्क पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू द्वारा पशुपालकों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण में पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विशेषज्ञों से हुआ। इसके बाद इन्होंने बकरी फार्म में बकरियों के रखरखाव व खानपान के बारे में जानकारी ली। इसके बाद नये सिरे से 30 सिरोही बकरी व 20 छोटे बच्चों के साथ बकरी पालन शुरू किया। इसके कुछ महीने बाद 20 मेमने प्राप्त हुए। धीरे–धीरे बकरियों की संख्या बिना किसी परेशानी के बढ़ती गई और वर्तमान में इनके पास 90 सिरोही नस्ल की बकरें व बकरियां हैं। इससे ये 8 लाख रुपये की वार्षिक आय अर्जित कर लेते है। हरिप्रसाद वर्तमान में पशु विज्ञान केंद्र, झुंझनू द्वारा आयोजित प्रशिक्षण में भाग लेते हैं जिससे इनको काफी फायदा हुआ। प्रशिक्षण के दौरान कृमिनाशक दवा का उपयोग व खनिज लवणों की उपयोगिता व टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, संतुलित पशु आहार आदि की जानकारी प्राप्त की और इन्हे अपनाया, जिससे इनकी बकरियां हष्ट–पुष्ट हैं और गर्भपात जैसी समस्या भी नहीं है। इनको खान–पान में चना, मैथी, मूंगफली का भूसा, जौ, चने व बाजरा दाना देते है। हरिप्रसाद पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए काफी उत्साहित हैं व अन्य किसानों को भी बकरी पालन हेतु प्रेरित करते हैं।

ट्रांसपोर्ट का काम छोड़ डेयरी व्यवसाय से कमा रहे लाखों

पशुपालक का नाम	:	श्री यशपाल सिंह राघव
पिता का नाम	:	श्री इन्द्रजीत सिंह राघव
उम्र	:	47 वर्ष
पता	:	चूड़ी चतुरपुरा, मंडावा (झुंझुनूं)
शिक्षा	:	12वीं पास
मोबाइल नं.	:	9871274242

दिल्ली से ट्रांसपोर्ट का काम छोड़कर यशपाल सिंह राघव हाल निवासी चूड़ी चतुरपुरा जिला झुंझुनूं पिछले 3 वर्ष से डेयरी व्यवसाय कर रहे हैं। इन्होंने सर्वप्रथम 5 गायों से डेयरी व्यवसाय शुरू किया था। धीरे–धीरे उच्च नस्ल की गाय खरीदना शुरू किया। वर्तमान में इनके पास 30 गायें हैं। इनकी एक गाय लगभग 20 लीटर दूध देती है। इन्होंने उच्च नस्ल के वीर्य गर्भाधारण करवाकर अच्छी नस्ल की बछियां भी तैयार की हैं। जिससे पिछले ब्यांत में ही 25 लीटर दूध का उत्पादन लिया जा रहा है। इन्होंने पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू के संपर्क में आने के बाद केंद्र द्वारा बताई गई तकनीक से हरे चारे की अजोला और साइलेज जैसी पद्धतियों को अपनाया। समय–समय पर टीकाकरण और कृमिनाशक दवाओं की उपयोगिता को जाना, उन्होंने खनिज लवण की दूध उत्पादन में उपयोगिता और पशुओं में खनिज लवण की कमी से होने वाले विकारों को जाना और अपने पशुओं को खनिज लवण खिलाना शुरू किया। परंपरागत तरीके से पशुओं के लिए आवासीय शैड का निर्माण किया जिसमें उन्नत नस्ल की गायों को रखकर अपनी स्वास्थ्य पहलुओं की प्रयोगशाला जांच करवाई ताकि लोगों को उच्च गुणवत्ता का दूध मिल सके। आज वह दूध को फार्म पर बैठे ही बूथ के जरिए अपने दूध की 30 रूपये प्रति लीटर में बिक्री कर रहे हैं। इससे इनकी वार्षिक आय लगभग 14–15 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

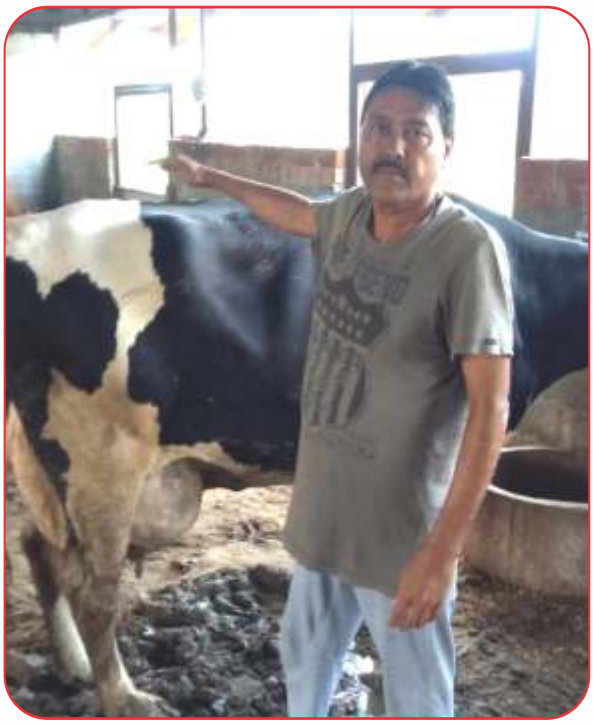

उन्नत तकनीक अपनाकर पशुपालन में बनाई अपनी पहचान

पशुपालक का नाम	:	श्री रूघाराम महला
पिता का नाम	:	श्री बुलाराम महला
उम्र	:	56 वर्ष
पता	:	डुमरा, नवलगढ़ (झुंझुनूं)
शिक्षा	:	अनपढ़
मोबाइल नं.	:	7568420610

रूघाराम महला निवासी डुमरा, तहसील नवलगढ़, जिला झुंझुनू के निवासी है। रूघाराम काफी समय से कृषि कार्य करते आ रहे हैं लेकिन कृषि में कम मुनाफा होते देख इन्होंने डेयरी व्यवसाय करने की ठानी। इन्होंने 2016 में दो गायों से शुरुआत की तथा 2019 में पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू के संपर्क में आने व प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने व्यवसाय को बढ़ाते हुए वर्तमान में इनके पास 21 एच.एफ. नस्ल की गायें व 3 भैंस तथा एक मुर्रा नस्ल का भैंसा है। वर्तमान में रूघाराम अपने इस व्यवसाय से 1 से 1.5 लाख प्रतिमाह कमा रहे हैं। रूघाराम समय–समय पर पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनू के संपर्क में रहते हैं तथा अपने पशुओं को समय–समय पर टीकाकरण करवाते हैं। खनिज मिश्रण तथा कीड़े मारने वाली दवा समय–समय पर देते रहते हैं। रूघाराम पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू से जुड़ कर बहुत खुश हैं तथा अन्य पशुपालक भाइयों को भी पशु विज्ञान केंद्र, झुंझनू से जुड़कर उच्च तकनीकी ज्ञान लेकर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने की सलाह देते हैं।